जीवन कथाएं : मृत्यु के लिए तैयार

Ready for Death

आपके जीवन में परिवर्तन लाने वाले क्षण सदैव भौतिक अथवा दैहिक नहीं होते । मेरे जीवन में सबसे ज्यादा संवेदनशील बिन्दुओं में से एक था जब मैंने अपनी गुप्त लालसाओं का अनुसरण करने का निर्णय लिया और वह था जीसस ईसा को समझना । यह पूर्ण रूप से एक परिवर्तन का दौर था । जब मैं बच्चा था तो मेरे मत से सभी धर्मों में सत्य स्वरूप ही दि□ाई देता था । परन्तु धर्मों के के बारे में जानने में पर्याप्त कठिनाईयां थी । वास्तव में प्रभु है क्या ? यह मेरा सबसे बड़ा प्रश्न था । मैं अपने इर्द गिर्द देखता और स्वयं से प्रश्न करता कि जीवन जीने का सबसे सर्वोत्तम उपाय क्या है । मेरे कुछ मित्रगण नशीली दवाओं का उपयोग करते थे, अपने जीवन के कुछ क्षणों में आनन्द लूटते थे, भ्रष्टाचार में लिप्त रहते थे तथा समाज में अन्याय ही अन्याय दिखाई देता था । मेरे कुछ मित्रों में से एक की दवाओं का दुरूपयोग करने से मृत्यु हो गई । वास्तविक जीवन कहां है ? मैंने देवताओं की अधिक से अधिक पूजा-अर्चना की । मैंने प्रभु से सफलता की □ाम-ना □ी, प्रभु -ने मुझे सफलता प्रदान की - परन्तु शांतिपूर्ण तरीके से जीने में वास्तविक जीवन कहां है । मुझे क्या करना चाहिए ? अन्त में सामान्य रूप से अन्य देवी-देवताओं की नियमित पूजा के दौर देखने की बजाय मैंने इसमें परिवर्तन करने का निर्णय लिया । सितम्बर 16, 1989 के दिन मैं एक छोटे द्वीप में गया और जीसस ईसा प्रभु के पुत्र के रूप में अपनी आस्था की पुष्टि के समर्थन में मुझे ईसाई धर्म अपनाने हेतु संस्कारित f□या □या । मुझे अपने जीवन में वास्तविक आनन्द की अनुभूति हुई तथा शांति मिली । प्रभु तथा उनके पुत्र जीसस में अपनी आस्था के महत्व को मैंने जाना । जीवन में जब सब कुछ गलत हो रहा हो, तो केवल अपनी आस्था डिगने मत दो । जब किसी कार्य से आपकी प्रतिष्ठा में आंच आए तो केवल अपनी आस्था बनाए रखें । जब लोग आपकी इच्छानुसार अपनी प्रतिक्रिया नहीं करते तो केवल आस्था ही सहारा है । जब आपके पास धन कम हो तथा बिलों का भुगतान समय पर करना हो तो केवल आस्था । जब लोग आपको सही रूप से -न समझ सकें तो केवल आस्था से ही जुड़े रहें । आपको वास्तविक जीवन की अनुभूति हो सकती है ।

पारिवारि□ भूमि□ा

भारत के उत्तर-पूर्व में मणिपुर में एक हिन्दु परिवार में मेरा जन्म हुआ ।

अपने परिवार में मैं सबसे छोटा पुत्र हूँ । मेरे तीन भाई तथा एक बहन है । मेरे पिताजी एक अध्यापक तथा माताजी कुशल गृहिणी थीं । बचपन में मेरे अधिकांश मित्र लड़कियां ही थीं क्योंकि हमारे पड़ोस में मेरी आयु के लड़के नहीं थे । जब कभी मैं उनके घर जाता तो वहां मेरा स्वागत होता ।

मेरे मां-बाप -ने मुझे पूजा-अर्चना के हिन्दु तौर तरीकों के बारे में सिखाया । दैनिक आधार पर प्रातःकाल तथा सांयकाल में हम ध्यान भी लगाते थे । कभी कभी हम सब इकट्ठे बैठकर अपने पिताजी द्वारा पढ़ी जा रही भगवद्-गीता का पाठ सुनते थे । साथ ही साथ सप्ताहांत में रेडियो पर रामायण की कथा भी सुनते थे । इसे सुनना मैं कभी नहीं भूला ; कथा सुनने के लिए मैं कभी कभी स्कूल भी नहीं जाता था ।

एक दिन मुझे सड़क पर कुछ सुन्दर काले पत्थर पड़े मिले । उन्हें रखने तथा खेलने के लिए मैं उन्हें घर ले आया । मेरे घर में एक बार एक पुरोहित गृह पूजा हेतु आए । मैंने उन्हें इन पत्थरों को दिखाया तथा उन्होंने मुझे बताया कि ये प्रभु का स्वरूप हैं । मैं बहुत खुश हुआ तथा अपना ध्यान इस ओर लगाया और कभी कभी इस पर दूध स्नान भी कराया । इसके बाद इनका कहीं पता नहीं चला । उन्होंने मुझे कहा कि वे कहीं चले गए होंगे । मुझे इस बात का पता नहीं चल सका कि ये सब कैसें हुआ ।

मेरे गृहनगर के समीप एक छोटी सी पहाड़ी थी । इस पहाड़ी के शिखर पर एक बहुत सुन्दर मंदिर था । मैं प्रत्येक शुक्रवार को मंदिर की सफाई करता था, पूजा करता तथा एक मोमबत्ती भी जलाता था ।

मेरे चाचाजी के पास लक्ष्मी अथवा सरस्वती की बड़ी प्रतिमाएं थीं तथा दोपहर के भोजन से पूर्व वे उन प्रतिमाओं की पूजा-अर्चना करते थे । जब मुझे पहली बार इन प्रतिमाओं को मुझे दिखाया गया तो मैंने कहा, जब मैं बड़ा होऊंगा तो इनकी इस प्रकार से पूजा अवश्य करूंगा । इन प्रकार के भावों-प्रभावों से मैं बड़ा हुआ ।

<u>प्रभु -ने f□स प्र□ार से मुझे पु□ारा</u>

<u>प्रथम बार</u>

मुझे अभी तक याद है कि जब मैं चार या पांच वर्ष का था और अपनी माताजी के पास बैठा था और उनके साथ एक और व्यक्ति भी बैठा था (उस व्यक्ति का नाम मुझे अभी याद -नहीं है) एक छोटी कहानी पुस्तक से जीसस ईसा की जीवनी पढ़ रहा था । इस कहानी की पुस्तक को देखते ही मेरा हृदय तथा शरीर इतने पावन हो गए जैसे मैंने स्नान कर लिया हो । मैंने अपनी माताजी से पूछा कि यह व्यक्ति कौन है जिसकी मृत्यु होती है और मृत्यु के उपरांत जी जाता है फिर भी वह अपने शत्रुओं को नहीं मारता । मेरी माताजी इसका अच्छा सा उत्तर नहीं दे पाई । मैंने उनसे पुनः पूछा तो उन्होंने यह कहा कि यह मात्र एक कहानी है । फिर उन्होंने हमें बताया कि मृत्यु के उपरांत मृत्तक जीवित हो उठेंगे । अपनी माताजी के उत्तर से मैं संतुष्ट नहीं हुआ । इसी क्षण मैंने सूर्य की रोशनी में आकाश में सुन्दर बरसात देखी । मेरे घर के चारों ओर के क्षेत्र में बड़ी भारी बारिश हुई तथा बहुत पानी भर गया । इससे पहले मैंने कभी भी खूबसूरत चमकदार आसमान में इस प्रकार की बरसात नहीं देखी थी । यह प्रथम अवसर था कि प्रभु ने मुझे अपने इस तरीके का आभास कराया ।

<u>दूसरी बार</u>

एक दिन मेरे मित्र ने ईसाईयों की पूजा-अर्चना देखने जाने के लिए कहा । हमें पता चला कि यह पूजा-पाठ का एक सुन्दर तरीका था, परन्तु हम जीसस व्यक्ति के बारे में नहीं जानते थे । जब हमने उन्हें पूजा पाठ करते देखा तो हमने उनका उपहास उड़ाया । साथ ही, हमें उनकी कबीलाई भाषा की जानकारी भी नहीं थी ।

कुछ वर्षों के बाद, मेरे चचेरे भाइयों में से एक ने ईसाई धर्म अपना लिया । इस □ार्य □ लिए उसके पिताजी ने उसकी पिटाई कर दी । उसने अपने पिताजी से कहा, जीसस के नाम से आप मुझे जान से भी मार सकते हैं - मैं मरने के लिए तैयार हूँ । चूंकि यह सब हुआ, हमारे सम्बन्धियों ने एक बैठक बुलाई । उन्होंने इस बैठक में कहा, यदि तुम ईसाई धर्म अपनाना चाहते हो तो हमारा किसी प्रकार का आपसे कोई रिश्ता नहीं होगा । यदि कोई अपने घर आता है तो हम इसके लिए रूपये 200-00 की राशि वसूलेंगे । मेरे चचेरे भाई ने मुझे कहा कि जीसस की पूजा-अर्चना करना न छोड़ें ।

इसके पश्चात उसका परिवार हमारे समाज से कट गया - उसका मकान एक धान के खेत के समीप बनाया गया तथा उसके मित्रगण कबीलाई थे । मैंने भी अपने रिश्तेदार के

निर्णय तथा कार्य का समर्थन किया । मैंने इस तरीके से सोचा क्योंकि मेरे विचार में ईसाई गायों को मारते थे हमारी सभ्यता का नाश करते थे ।

जीसस ईसा - मुझे स्वी□ार

एक शाम मैं अपने कुछ मित्रों के साथ अपने चचेरे भाई के घर गया तथा गृह पूजा सेवा में शामिल हो गए । अलापा गया गीत बहुत मधुर था : मैंने ऐसा गीत पहले कभी नहीं सुना था और मेरे हृदय ने कुछ विशेष अनुभव किया । बार बार हमने एक के बाद एक गीत गाया । गीत के शब्द थे : जीसस इस दुनिया में फिर लौटेंगे और हम आनन्द मनाएंगे । परन्तु जीसस के बारे में मैं कुछ भी नहीं जानता था: मैंने सोचा कि जीसस एक कबीलाई प्रभु थे । मैंने अपने पिताजी को उनकी पूजा-अर्चना, प्रार्थना तथा गीत गायन के बारे में बताया । उनके प्रार्थना के समय में हमने उनका उपहास किया। उन पर व्यगं्य किया ।

इसके कुछ माह बाद अपने स्कूल में हमने ईसाईयों के बारे में बातचीत की । कुछ ईसाई मित्रों के साथ व्यक्तिगत रूप से मैंने बात की । जब हम बात करते तो हम उनसे बहस करते थे कि सच्चे ईश्वर को पाने का कौनसा तरीका सही है । कभी कभी मैं इस बातचीत/बहस में जीत जाता, कभी कभी वे जीत जाते । मैं जीसस के बारे में बहुत कुछ जानना चाहता था । उसी समय मैंने अधिक से अधिक हिन्दु देवी देवताओं की पूजा करना प्रारम्भ कर दिया । मैंने जीसस के बारे में अधिक से अधिक प्रश्न पूछना शुरू कर दिया परन्तु कोई भी व्यक्ति मुझे जीसस के बारे में सही उत्तर न दे सका । उन्होंने मुझे केवल इतना बताया कि आप यदि ईसाई हैं तो आपको यह करना है --- यह □र-ना है व□ैरा वगैरा । वे कहते थे, आप हिन्दु मूर्तियों की पूजा न करें । वे सब बुराईयां हैं । (इस पर मैं बड़ा क्रोधित हुआ) । यदि आप ईसाई धर्म अपना लेते हैं तो आपको रविवार को काम करने की अनुमति नहीं । साथ ही यह भी कहते, कैसे एक पत्थर/शिला ईश्वर बन जाता है ? वे हमेशा हिन्दुओं की पूजा करने के तौर तरीकों की निन्दा करते । कभी कभी मैं उनकी भाषा न समझ पाता । ईसाईयों को हमारे घर में आने की अनुमति नहीं थी ; जाति प्रथा के कारण, हम उन्हें हेय दृष्टि से देखते थे । यह सब सही था, इस पर मैं कतई विश्वास नहीं करता था, क्योंकि उन्होंने तो केवल संस्कृति को तोड़ा-मरोड़ा है । हमारे सम्बन्धियों के निर्णयानुसार जो उनके घर आता वे उसे दंडित करते परन्तु मामले के लिए न तो मैं अपने चचेरे भाई के यहां जा सका और न ही पूछ सका ।

छः वर्ष के बाद ईसाईयों में से एक इसाई जो हिन्दु परिवार से था, अपनी पढ़ाई पूरी करके मेरे गृहनगर के पास आ ठहरा । हम अधिकतर समय इकट्ठे बिताते । वह हमें ईश्वर के बारे में बताते । वह आस्था तथा अन्य धार्मिक प्रवृतियों की व्याख्या करते । मैं अधिक से अधिक प्रश्न पूछता तथा उनके उत्तर सही प्रतीत होते थे । हम प्रार्थना करते तथा कुछ माह के लिए हमारी मित्रता हो गई । हमने यह सब गुप्त तरीके से किया, हमारे किसी भी पड़ोसी को इसकी भनक न लगी । बाइबल में जॉन 14:1-3, में एक रोचक वाक्य है - *अपने हृदयों को संकट में न डालें * । परमेश्वर में विश्वास रखें तथा मुझमें भी अपना विश्वास रखें । मेरे पिताजी के घर में बहुत से कमरे हैं, यदि ऐसा न होता तो मैं आपको बताता कि मैं आपके लिए एक स्थान बनाने जा रहा हूँ । यदि मैं आपके लिए स्थान बनाने जा रहा हूँ, तो मैं लौटूंगा तथा आपको अपने साथ ले जाऊंगा ताकि आप भी वहां रहें जहां मैं रहता हूँ । एक दिन मैंने अपने मन में ही एक निर्णय लिया कि शाम को अपने एक नेता से जीसस का अनुसरण करने के लिए पूछूंगा तथा इसे ईसाई धर्म अपनाने के संस्कार संबंधी कदम का इज़हार करें । परन्तु मैंने यह निर्णय भी लिया कि इसे मैं किसी को नहीं बताऊंगा । जीसस को जानने का निर्णय लिए मैं अपने कुछ मित्रों के पास पहुंचा तथा उनसे बातचीत की । इससे पहले कि मैं उससे पूछता, उसने बताया, हम एक ऐसे व्यक्ति को जानते हैं जो मणिपुर द्वीप में रहते हैं तथा वे इस मामले में आपकी मदद करेंगे । वे मेरे साथ जाना भी चाहते थे तथा जीसस का अनुसरण करने तथा ईसाई धर्म अपनाने हेतु संस्कारित होने के मेरे निर्णय को जानने के लिए काफी उत्साहित थे । जीसस को जानने के लिए मेरा दिल आनन्द में हिलोंरे ले रहा था । मेरे हृदय में उल्लास भरा था । तब मैंने जाने का निर्णय लिया । मैंने अपने परिवार के लोगों से इस द्वीप में पूरा चन्द्रमा देखने ी अनुमति मांगी । उन्होंने मुझे इसकी अनुमति दे दी । यह मेरे घर से 53 किलोमीटर की दूरी पर था और उसी स्थान पर मैनें जीसस के अनुसरण करने के इरादे की घोषणा की तथा ईसाई धर्म अपना कर संस्कारित हुआ ।

<u>मेरे परिवार ने मेरे लिए द्वार बंद किए परन्तु एक अध्यातमविद्या संबंधी कॉलेज ने द्वार खोल दिए ।</u>

एक दिन मेरे पिताजी को पता लगा कि मैं एक ईसाई के विवाह समारोह में भाग लेने जा रहा हूँ । वे ल□भ□ मुझे मारने को दौड़े तथा उन्होंने कहा, तुम मेरे संबंधियों में से पांच बड़े बुजुर्गों के पास जाना होगा तथा अपना खेद प्रकट करना होगा तथा तुम यह सब फिर से नहीं करोगे । मैने वह सब किया ।

मेरे परिवार में संदेह हुआ कि मैं चुपके चुपके चर्च में जा रहा हूँ । परन्तु वे इसकी खोज नहीं कर सके तथा मेरा जाना सिद्ध नहीं कर सके । जब कभी भी मैं चर्च जाता, तो द्वार में प्रवेश □र-ने से पूर्व मैं अच्छी तरह देख लेता कि कोई मुझे सड़क से देख तो नहीं रहा । जब कोई भी मुझे न देख रहा होता तो मैं दौड़कर चर्च में चला जाता । अपनी बाइबल को मैं गुप्त रखता तथा इसका बड़ा ध्यान रखता । वर्ष के दौरान मेरे पिताजी जो एक अध्यापक थे, उनका तबादला पर्वतीय क्षेत्र में हो गया ।

दिनांक 3 अक्तूबर, 1989 को दोपहर के भोजन के दौरान, मेरे पिताजी को पता चला कि मैं ईसाई फैलोशिप में भाग ले रहा हूँ । मेरे पिताजी ने तब मेरा भोजन हटा लिया तथा मुझे मारा । मैं अपने कमरे की तरफ दौड़ा, दरवाजा बंद किया और ईश्वर को याद किया, मेरे प्रभु मेरा क्या होगा ? मेर चेहरे पर लगातार आंसू बहते जा रहे थे परन्तु मेरा हृदय प्रसन्न तथा स्वच्छ था - इस प्रकार की प्रसन्नता का आभास मैं कभी नहीं भूलूंगा । मेरे पिताजी ने मुझसे □हा - आज से तुम मेरे पुत्र नहीं रहे । दोबारा मत आना । कुछ देर बाद मेरे पिताजी चले गए । मैं अपने कमरे से बाहर आया तथा धर्म पुरोहित के पास गया और पूछा कि मुझे क्या करना चाहिए ? उसने कहा, हम प्रार्थना करते हैं । मैं कुछ समय तक के लिए व्यवस्था कर दूंगा और तब इसके बाद अगले वर्ष बाइबल स्कूल चला जाऊंगा । सात दिन के बाद मैं अपने घर में गया तो उस समय मेरी माताजी अकेली थी । मेरे पिताजी अपने कार्य-स्थल से महीने में एक या दो दिन के लिए आते थे । यदि मेरे पिताजी घर पर होते तो मैं उनसे दूर ही रहता ।

घर में ठहरने का मैं सबसे अच्छा तरीका ढूंढ रहा था । घर की आवश्यकताओं के लिए मुझे अच्छे कार्य करने पड़ रहे थे । मुझे दिखाना था कि मैं हमेशा घर पर ही रहूंगा तथा रविवार को चर्च में भी नहीं जाऊंगा । मैं जो कुछ भी कर रहा था, वे सब उससे खुश थे परन्तु मेरे पिताजी ने मुझे कभी नहीं बुलाया । यदि कुछ गलत हो जाता तो मेरे भाई मेरा उपहास उड़ाते थे क्योंकि मैं जीसस में आस्था रखता था ।

वर्ष 1990 में मैंने अपने परिवार वालों से कोलकाता में अध्ययन करने की अनुमति मांगी । उन्होंने मुझे अनुमति दे दी तथा मैंने कोलकाता बाइबल सेमिनरी में प्रवेश पा लिया । अध्यातमविद्या कॉलेज की अपेक्षा मैं विभिन्न प्रकार के संभाषण तथा संदेश देता क्योंकि मैं नहीं चाहता था कि उन्हें पता चले कि मैं बाइबल का अध्ययन कर रहा हूँ । सोलह माह

बाद उन्हें इसका पता चला तथा वे मुझे कोलकाता से लेने के लिए आ गए । मैं छः माह तक रहा तथा उसके बाद मैं घर से भाग खड़ा हुआ तथा कोलकाता में बाइबल सेमिनरी में अपना अध्ययन करने के लिए प्रवेश पा लिया । इस बार उन्होंने मुझे बहुत से पत्र लिखे तथा मेरे मित्रों ने भी तथा मेरी बुरी तरह से आलोचना की । किसी भी चीज़ के लिए उन्होंने मेरा साथ नहीं दिया । किसी तरह से मैंने अपना अध्ययन पूरा किया तथा वहां कोलकाता में अध्ययन करते समय एक छोटा सा काम भी मिल गया ।

<u>अध्यातमविद्या कॉलेज ने द्वार बंद किए और मेरे परिवार में द्वार खोले :</u>

एक बड़े शहर के गिरिजाघर में व्यवहार करते तथा काम करते हुए , शिक्षालय के विचार से मेरा ईश्वरज्ञान तथा मूल्य इतने दृढ़ नहीं थे कि वे इस शिक्षालय में अनुकूल स्थापित हो सकें । मुझे पता चला कि मैं अपनी बात को स्वीकार कर सकता हूँ और फिर भी, मैं कौ-न हूँ - इस संघर्ष में मेरा ध्यान केन्द्रित था ।

इस शिक्षालय में तीन निदेशकों के निर्देशन में छः वर्ष तक कार्य किया । यहां काफी कठिनाईयों के दौर से गुज़रते हुए मैंने बहुत सीखा । यह काफी बड़े दायित्व का कार्य था परन्तु मैंने इस कार्य में आनन्द लिया ।

मुझे विश्वास था कि परमात्मा है । जब कभी भी कोई संकट की घड़ी आती थी तब मेरी यही आस्था थी कि वह सबकुछ कर सकता है । मुझे पूरा विश्वास था कि परमात्मा मेरी सारी ज़रूरते पूरी करेंगे ।

तब मैंने सेरमपुर कॉलेज में प्रवेश पा लिया । मेरा अध्ययन चुनौतीपूर्ण रहा जिसमें मेरे पास धन की कमी थी और एक अच्छे अध्ययन के लिए आवश्यक चीज़ों को खरीद पाना बड़ा कठिन था । ऐसे समय के दौरान मैं कभी कभी अपने परिवारवालों से फोन पर बात करता तथा पत्र भेजता था । मैं उनके लिए अक्सर प्रार्थना करता रहता । उन्हें मेरे साथ बातचीत करने में खुशी होती थी, इसलिए मैंने उनसे पूछा क्या मैं मणिपुर में उनके पास आ सकता हूँ । उन्होंने मुझे मिलने के लिए घर आने को कहा । मैंने महसूस किया कि मुझमें काफी परिवर्तन आ चुका है । अभी तक मेरे पिताजी मेरे से खुश नहीं थे परन्तु उन्होंने कहा कि जब तक मैं जीसस के बारे में नहीं कहता, तब तक मेरा इस घर में स्वागत है । इस बार घर आना मेरे लिए बहुत अर्थपूर्ण था । मेरे पिताजी ने भी मेरा थोड़ा सा समर्थन

किया । मेरे पिताजी ने मुझसे कहा कि अगर मैं नौकरी पर जाना चाहूँ तो वे मेरी इसमें मदद करेंगे परन्तु बाइबल अथवा मिशनरी कार्यों के लिए उन्हें कुछ न कहा जाए ।

यद्यपि मुझे वित्त संबंधी मामलों में काफी संघर्ष करना पड़ा, फिर भी परमात्मा ने समय समय पर मेरी सहायता की । मैंने अगले एक वर्ष तक संघर्ष किया । मेरे सामने अभी तक चुनौतियां हैं । इनका सामना करने के लिए मैं दृढ़ प्रतिज्ञ हूँ तथा इस तरीके से कार्य करता रहूँगा कि इसमें सफलता प्राप्त करूं ।

ई एम एस